साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 50, दिसम्बर(प्रथम) , 2018

डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अँग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' का डॉ० अनिल चड्डा द्वारा हिन्दी अनुवाद

लेखक – डॉ० रिक लिंडल
अनुवादक – डॉ० अनिल चड्डा

अध्याय 10

चेतना की प्रकृति

बाद में उस शाम सोने से पहले, रिक्की ने उस कैप्सूल को खोला जो वृद्ध आत्मा ने उसे दिया था. एक ही क्षण में उसने स्वयं को एक होलोग्राफिक नाट्यशाला में बैठा हुआ पाया जहां वह चेतना की उर्जा-अभिव्यक्ति की घूमती हुई कुंडलियाँ देख सकता था जब वह शुद्ध चेतना के एक समानांतर आयाम में घटनाओं की रचना कर रही थीं और उन्हें भौतिक संसार में 'विकसित सामंजस्य' के पंखों पर भेज रही थीं. उसने देखा कि भौतिक ब्रहमांड में प्रकट होने से पहले प्रत्येक अभिव्यक्ति की एक प्रति, उपपरमाण्विक कण से लेकर अत्यधिक जटिल जैविक जीव तक, बनी थी.

विवरण विलक्षण था. दूसरी चीजों में, रिक्की ने अब देखा कि कैसे जीवनकाल जन्म से पहले अनिवार्यत: तैयार किये जाते हैं - उन परिवर्तनों के अलावा जो इस समानांतर आयाम में तत्काल उत्पन्न होते हैं, उन फैसलों के अनुसार जो आत्मा अवतरण के दौरान 'स्वतंत्र इच्छा' के आधार पर करती थी. वह देख सकता था कि कैसे व्यक्ति अपने अनुभवों को चुनते थे और कैसे वह स्वयं अपने जीवन के नाटक के केंद्र में प्रकट होते थे, नायक, खलनायक या पीड़ित व्यक्ति की भान्ति. उसने यह भी देखा कि कैसे चेतना की यह उर्जा-अभिव्यक्तियाँ निरंतर भौतिक संसार में जाती रहती हैं और ग्रह को, और प्रत्येक उस चीज को जो इसमें है, जोड़ कर रखती हैं.

जब रिक्की यह प्रक्रिया देख रहा था, तो उसे यह स्पष्ट हो गया था कि प्रत्येक जीव चेतना की उर्जा के इस स्थिर आवेग पर निर्भर थी, जो उर्जा के प्रकटन की भांति निर्गत होती थी, जिसके बिना यह कुछ मिनटों से अधिक जीवित नहीं रह पायेगी. धरती पर प्रत्येक चीज इस निरंतर गतिशीलता से स्वत: ही कायम रहती है. वह सोच रहा था कि कैसे वह इस तथ्य से अनभिज्ञ था, और कैसे प्रत्येक व्यक्ति पहले से यह मान कर चलता है, कि चेतना की उर्जा जिस रूप में सारे शरीर का रखरखाव करती है, सांस लेने, पोषण और मलत्याग की क्रियाविधि, तरल पदार्थों के दौरे सहित,

और, एक दूसरे स्तर पर, सभी अंगों के बीच की क्रियाविधि का समन्वय करती है, वह सारे शरीर को सहज रूप से कार्य करने के लिये सक्षम करता है.

वह उस जबरदस्त योजना के बारे में जान गया जो सभी स्तरों पर भौतिक अस्तित्व की तैयारी में होता है. न केवल उपआणविक, कोशीय, और व्यक्तिगत स्तर पर, अपितु समाज और सामजिक स्तर पर भी. आने वाली आपदाओं, शैक्षणिक कार्यक्रमों, धार्मिक ड्रामों, और सभी तरह के त्योहारों की योजना बन रही थी. यह सारी इस समानांतर आयाम में रची जा रही थीं, और उन्हें भौतिक संसार में पूर्ण-विकसित घटनाओं के रूप में होने के लिये 'विकसित सामंजस्य' के पंखों पर ले जाने के लिये नियत किया जा रहा था.

उसी समय, रिक्की को देख कर यह भी स्पष्ट हो गया था कि यह घटनाएं केवल आशय, आस्था, और इच्छाओं के फलस्वरूप होंगीं. इन सभी घटनाओं में सभी स्तरों पर सम्पर्क और समन्वय भी होगा; एक पेड़ के पत्ते के गिरने की चेतन जागरूकता से ले कर, अत्यधिक सामाजिक स्तर तक. और इसकी वजह से, कोई भी रहस्य नहीं था और कोई भी सांयोगिक घटना नहीं थी. किसी भी घटना से दूसरी घटना को हानि पहुँचाने का लाभ नहीं उठाया जा सकता था. सारी घटनाएं इच्छित थी; कोई भी जन्म, कोई भी दुर्घटना, और कोई भी मृत्यु संयोग से नहीं होती थी. अस्तित्व के हरेक स्तर पर सारे निर्णय सभी के सहयोग से लिये जाते थे, एक स्वर में, और चेतना के सभी स्तरों को देखते हुए.

समानांतर आयाम एक अपरिमित सूचना सेवा की भांति काम करता था जो तत्काल ही तुम्हारा उस ज्ञान से सम्पर्क कराता है जो तुम्हे चाहिये होता है और तुममें और दूसरों में एक प्रेममयी आशय के साथ, जिसमें तुम्हारे मस्तिष्क के सर्वोत्कृष्ट उद्देश्य होते हैं, और साथ ही साथ प्रत्येक दूसरे व्यक्ति के लिये भी होते हैं - दूसरी जातियों के सदस्य और प्रत्येक जीव के सहित, सम्बन्ध स्थापित कराता है. तुम दूसरों पर किसी उस घटना को लाद नहीं सकते थे जिसके लिये सहमति नहीं हुई थी.

यह समानांतर आयाम, जिसे वृद्ध आत्मा ने ढांचा 2 कहा था, तुम्हारे भौतिक संसार का अदृश्य संस्करण प्रतीत होता था, जिसे उसने ढांचा 1 कहा था. परन्तु, यह उससे भी कहीं अधिक था, क्योंकि इसने अपने अंदर तुम्हारे भौतिक ब्रह्मांड के सारे संभावित रूपों को समा रखे थे - अत्यधिक वृहत सीमा से ले कर किसी भी दिन में होने वाली छोटे से छोटी घटना तक.

जब रिक्की पीछे टेक लगा कर बैठा था और इस अनुभव को समझने की कोशिश कर रहा था, तो वृद्ध आत्मा प्रकट हुई और सुझाव दिया, "कल शाम को जब तुम अपने टेलीविजन के सामने बैठे होगे तो एक क्षण निकालना और कल्पना करना कि जो भी टेलीविजन की स्क्रीन पर देख रहे हो उसे तुम पीछे से ढांचा 2 में नियोजित कर रहे हो. प्रत्येक शारीरिक, दिमागी, और मनोवैज्ञानिक विवरण की प्रोग्रामिंग करने के बारे में सोचो, उस भौतिक व्यवस्था सहित जिसमें टीवी पर नाटक होता है. दिन का समय, मौसम, संगीत, रौशनी, नाटक की कथा और जो भावनाएं होती हैं - टेलीविजन नाटक में प्रत्येक दृश्य का प्रत्येक विवरण. फिर जिस नाटक को तुम देख रहे हो उसमें अपने आप को केन्द्रीय पात्र की तरह चित्रित करो और यह कि कैसे तुम प्रत्येक चीज की भावनात्मक

उर्जा में, जो तुम्हारे आसपास हो रही है, मिल जाते हो. यह उस तरह की चीज है जिसका निर्माण ढाँचे 2 में सूक्ष्म विस्तार से होता है - इससे पहले कि इसे ढाँचे 1 में भौतिक बनाया जाये - तुम्हारा भौतिक संसार."[59]

"अब तुम यह देख सकते हो कि कैसे तुम्हारा भौतिक संसार ढाँचे 2 से चेतना की उर्जा-अभिव्यक्ति के इस निरंतर सम्मिश्रण से पोषित होता है. उर्जा-अभिव्यक्ति का यह सम्मिश्रण तुम्हारे संसार में सारी भौतिक अभिव्यक्तियों को पोषित करता है, अनिवार्य रूप से रचना करके और फिर कार्बन, नाइट्रोजन, और ऑक्सीजन के जैव-भू-रसायनिक यौगिक पदार्थों का पुनर्चक्रण करके और उन्हें पुन: उर्जा प्रदान करके. यह जैव-भू-रासायनिक पुनर्चक्रण प्रक्रिया, ढांचे 2 से चेतना की उर्जा-अभिव्यक्ति के निरंतर बहाव के सहित, तुम्हारे ग्रह पर सारे जीवन को, सूक्ष्मतर जीव तक, बनाये रखता है. वह ढाँचे 2 में संचालन की विशालता है."

रिक्की उस अनुभव से चक्कर खा रहा जो उसे अभी-अभी हुआ था, और उसने उत्तर दिया, "मुझे यह समझ में आना शुरू आ गया है कि तुम्हारा क्या मतलब है. यह विस्मयकारी है!"

"हाँ, तुम अपने नाटक के केंद्र में हो, और तुम्हारे आशय और आस्थाओं के माध्यम से, तुम उसका निर्धारण करते हो जो तुम्हारे सारे जीवनकाल में होता है."

रिक्की ने अपने आप को बटोरने में थोड़ा समय लिया, और फिर पूछा, "लेकिन पाप के बारे में क्या है, इसका पाप के विषय से क्या संबंध है?"

"पाप की घटना जटिल है. तुम कई योगदान देने वालों के बारे में जानते होगे जो एक व्यक्ति को पाप कृत्य करने की ओर ले जाते हैं, इससे पहले कि तुम घटना को पूरी तरह से समझ सको, और यह उन योगदान करने वालों में से एक है."

---

59 **डेविड बोहम (1917-1992), 20वीं सदी के विख्यात सैद्धांतिक भौतिकवैज्ञानिकों में से एक, ने एक ऐसी ही अवधारणा का सुझाव दिया था. उसने सेठ के ढाँचे 1 जैसी ही एक 'स्पष्ट करने वाली व्यवस्था' की अवधारणा का सन्दर्भ दिया था और सेठ के ढाँचे 2 में 'इशारा करने वाली व्यवस्था' की अवधारणा का सन्दर्भ, और उसने जिसे वह 'होलोमूवमेंट' कहता था की उपस्थिति का सुझाव दिया था जो इशारा करने वाली व्यवस्था में से स्पष्ट करने वाली व्यवस्था में जानकारी उजागर करता है, और फिर उसे दोबारा वापिस करता है.**